गरीब लड़की

ALLUMETTE

चाहें गर्मियां हों या सर्दियां, वसंत हो या पतझड़,
आलिया हमेशा फटे कपड़े ही पहनती थी.
उसका कोई घर नहीं था. उसके कोई माता-पिता नहीं थे.

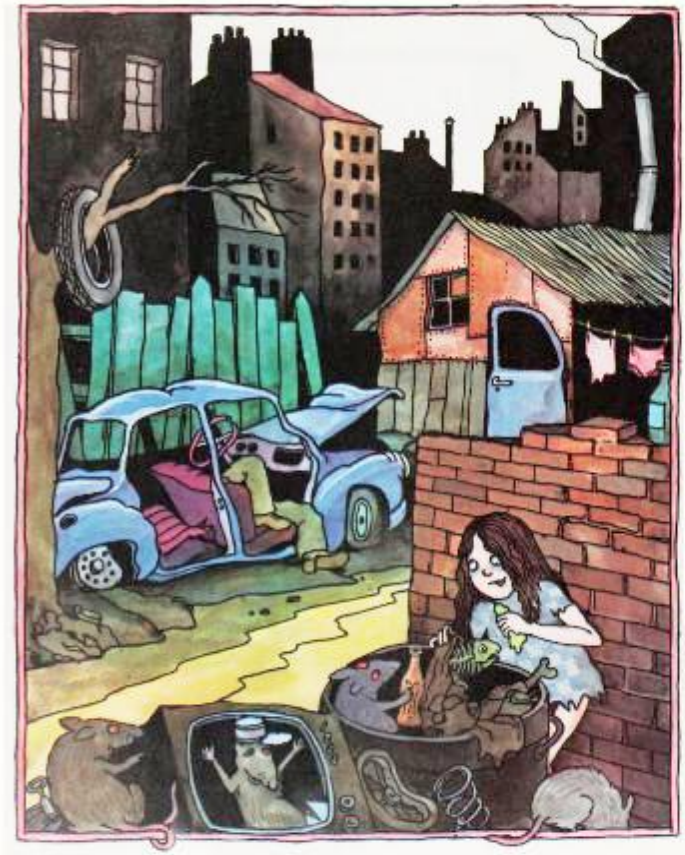

आलिया ने घूड़े के कचरे से रोटी का टुकड़ा निकालकर खाया, लोगों की सीढ़ियों पर आश्रय पाया और सड़क पर पड़ी पुरानी कारों में सोई.

वो शहर से बाहर भटकते हुए, माचिस बेंचती थी और अपना पेट भरने की कोशिश करती थी.

"ज़रा उस लड़की को देखो," किसी ने कहा. "वो फूल - या माचिस क्यों नहीं बेंच रही है?”

लेकिन अब माचिस की किसी को जरूरत नहीं थी?

सर्दी थी. क्रिसमस आने वाला था. सुसज्जित सड़कों पर फूल मालाएं लटकी थीं जिससे खरीदने वाले आकर्षित हों. संगीत की धुन लगातार हवा में बज रही थी. सैंटा क्लॉज़ की वेशभूषा पहने लोग घंटी बजा रहे थे. गर्म, फर और ऊनी कपड़े पहने भीड़ में लोग शोर मचा रहे थे और गरीब आलिया को बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर रहे थे.

अब देर हो चुकी थी और सड़कें खाली थीं. निराश और थके पैरों वाली आलिया एक पेस्ट्री शॉप के सामने रुकी. उसने अपनी छोटी नाक को कांच के शीशे पर दबाया ताकि प्रदर्शन पर रखे केक का स्वाद ले सके. लेकिन बहुत लम्बे समय के लिए नहीं...

बेकर महाशय फ़ौरन दौड़े हुए बाहर आए : "तेरी यह मज़ाल कमीनी, तूने मेरी कांच की खिड़की गंदी कर दी. चल, यहाँ से दफा हो जा! जल्दी भाग, नहीं तो मैं तुझे अपनी बेलन से चपटा कर दूंगा."

घबराकर, बेचारी छोटी बच्ची तेज़ी से वहां से भागी.

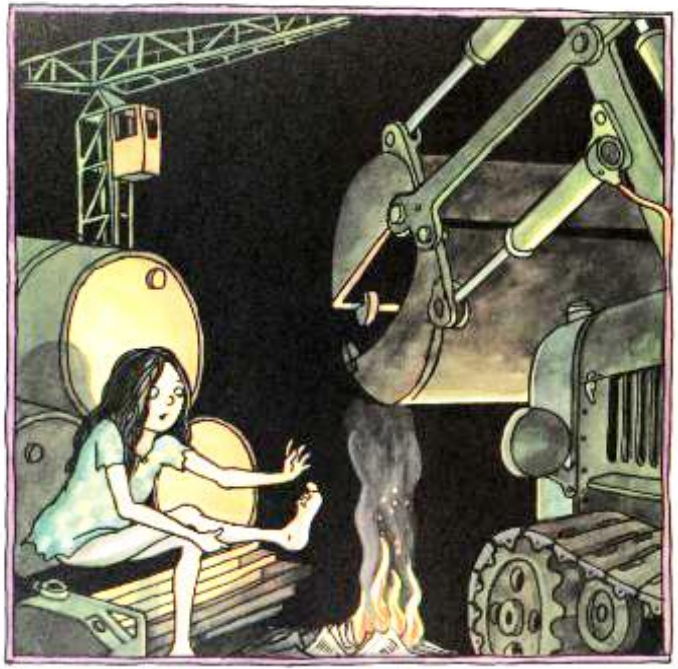

आलिया एक बिल्डिंग साइट पर पहुंची. वहाँ, अपनी आखिरी माचिस से उसने आग जलाई. आग धधक कर जली और गर्मी से उसे राहत मिली. लेकिन बहुत लम्बे समय के लिए नहीं...

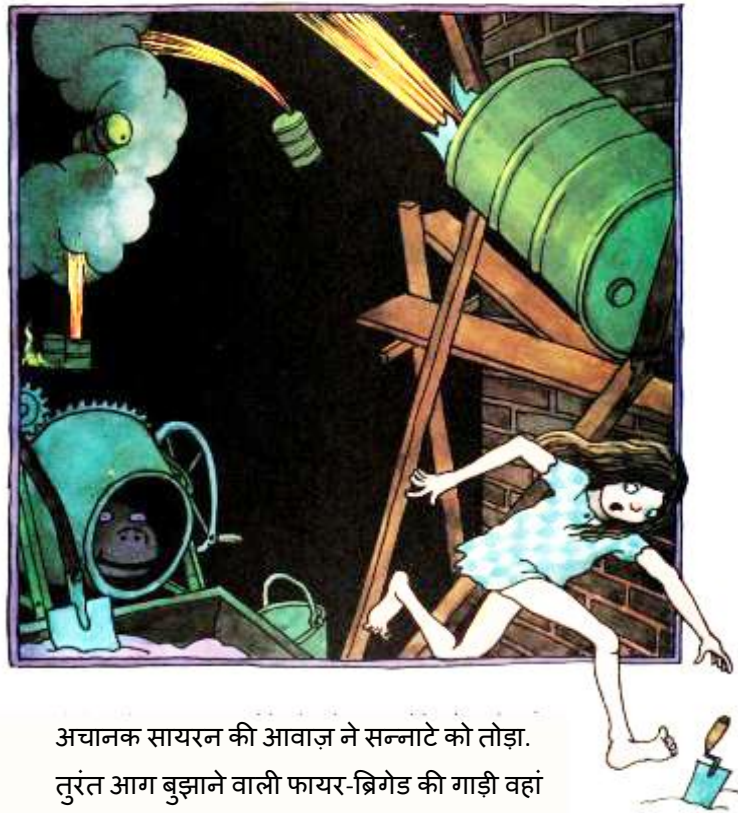

अचानक सायरन की आवाज़ ने सन्नाटे को तोड़ा. तुरंत आग बुझाने वाली फायर-ब्रिगेड की गाड़ी वहां पहुंची. आलिया फिर वहां से दौड़ी, उसकी परछाई रात के अँधेरे में घुल गई.

फिर कुछ क्षणों के बाद एक बड़ा जन्मदिन का केक उसके पैरों के पास पड़ा था. वो फुटपाथ से केक के टुकड़ों को उठा रही थी, तभी वहां भुने गोश्त का एक थाल वहां आया.

भूखी-प्यासी आलिया बहुत दूर नहीं जा पाई.
उसकी ताकत धीरे-धीरे कम हो रही थी, और अब उसके कमज़ोर शरीर में शक्ति नहीं बची थी.
साँस लेने, हिलने-डुलने, यहाँ तक कि चलने की भी ताकत उसमें अब नहीं बची थी. फिर वो फुटपाथ पर गिर गई.
"अरे," आलिया ने सोचा, "यह मेरा अंत होगा?"
फिर उसने मेहनत और लगन से प्रार्थना करना शुरू की:
“कृपया मुझे कुछ समय और जीने दें, कम-से-कम केक का स्वाद तो लेने दें, और गोश्त का एक टुकड़ा ज़रूर चखने दें. काश, कोई मेरी बात सुने, कोई तो मेरी प्रार्थना सुने."
आधी रात हो गई थी और चर्च का घंटा लगातार बज रहा था.
फिर बिजली की चमक और गड़गड़ाहट से आलिया की आँख खुली.

एक मुलायम कंबल और एक बैंगनी मफलर नीचे आया और उसे आलिया ने अपने कंधों के चारों ओर लपेट लिया. कोई ज़रूर उसकी प्रार्थना सुन रहा था. आलिया की इच्छाएँ पूरी हो रही थीं. धीरे-धीरे अन्य पकवान उसके पास आ रहे थे. एक तिपहिया साइकिल उसके पैरों के पास आकर रुकी. फिर कुछ देर शांति रही. लेकिन लंबे समय तक नहीं ... दुबारा बिजली चमकी और तेज़ आवाज़ हुई! फिर उसकी प्रार्थना बड़े जोश से रंग लाने लगी.

बादलों के झुरमुटों में तमाम चीज़ें नीचे गिरने लगीं.
वो चीज़ें, जिन्हें आलिया ने कभी चाहा था, वो सब
अब आसमान से गिर रही थीं.

उससे जमीन कांपने लगी, स्ट्रीट लैंप भार से झुक गए. बेकर और उसकी पत्नी अभी भी जाग रहे थे, और दिन के पैसे गिन रहे थे. गड़गड़ाहट और बिजली चमकने से महाशय बेकर ने अपने दरवाज़े में से बाहर झाँका.

"गज़ब!!" वो चिल्लाए. "आसमान से तमाम बेशकीमती सामान बरस रहा है.“ फिर अपने लालच में वे कुछ कीमती सामान को घर में लाने के लिए बाहर दौड़े.

तभी स्ट्रॉबेरी जेली भारी मात्रा में नीचे गिरी और उसमें बेकर की चीख की गूंज दब गई.

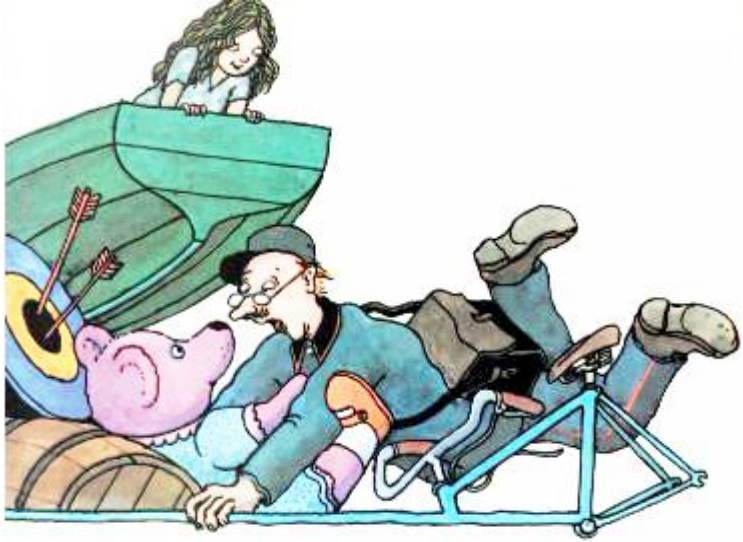

सुबह के समय आसमान साफ हो गया. तब तक, आसमान से गिरा सामान 37 फीट ऊंचा एक ढेर बन चुका था. आलिया बिना किसी एक खरोंच के उसमें से बाहर निकली. "मेरी प्रार्थना क्या रंग लाई!" उसने सोचा. तभी, साइकिल पर तेजी से एक डाकिया आया. साइकिल के पहिये मुरब्बे के पूल में फिसल गए और फिर वो एक बड़े टेडी बेयर (भालू) से जाकर टकराया, "मदद करो, मुझे मत काटो!" डाकिया चिल्लाया. "डरो मत, वो बस खिलौने वाला टेडी बियर है," आलिया ने कहा और फिर उसने डाकिए की उठने में मदद की.

"वो बड़ा भालू ज़रूर चिड़ियाघर से भाग कर आया होगा! वैसे यहाँ इतना ऊंचा पहाड़ क्यों है? यह सब क्या है?"

"यह सब मेरा है!" आलिया ने कहा.

"मैंने इसके लिए प्रार्थना की थी और फिर कल रात वो आसमान से बरसा. बात बस इतनी सी है."

"पर मुझे एक बात बताओ. तुम इस सब सामान का आखिर करोगी क्या?"

"इससे पहले कि चीजें खराब हों, मैं उन्हें लोगों में बाँट दूँगी," आलिया ने उत्तर दिया.

"उस हालत में मैं शहर के सभी लोगों को इसके बारे में बताऊंगा," पोस्टमैन ने कहा और उसने वो किया भी.

फिर शहर के हर कोने से लोग आये. लंगड़े-लूले, भूखे, ठंड से कांपते, युवा, बूढ़े, बेरोज़गार, बीमार और अंधे, मानसिक रूप से कमजोर वे सभी अपने अंधेरी बस्तियों, झुग्गी-झोपड़ियों से बाहर निकले. अपनी हवेलियों, आलीशान घरों के झरोखों से अमीर और स्वार्थी लोगों ने, लोगों के इस अंतहीन जुलूस को देखा.

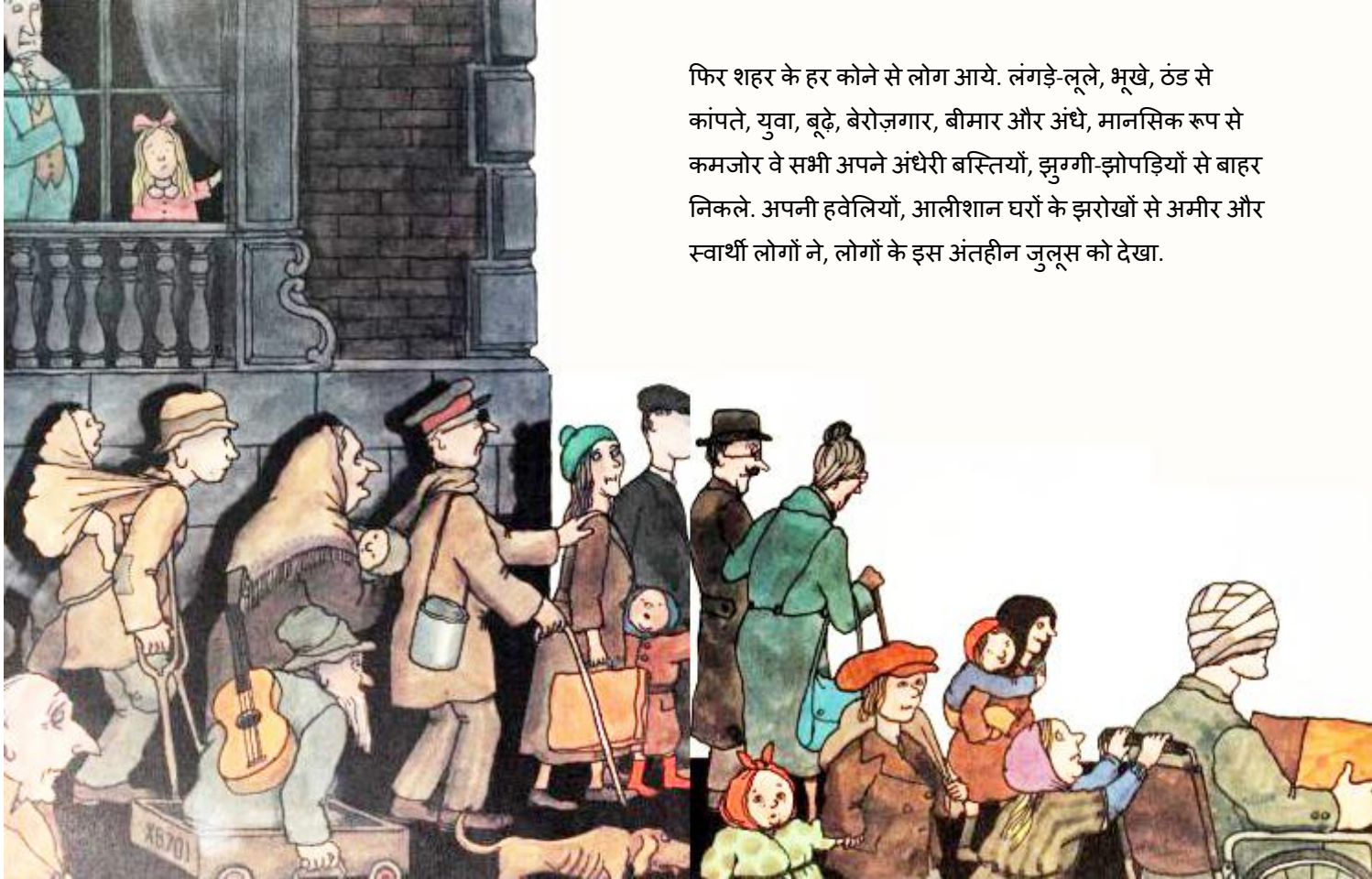

मेयर चिल्लाया, "यह हमारे शहर के अच्छे नाम पर एक धब्बा है. अंधे-लूलों की यह परेड भूल गई है कि वो कहां जा रही है!"
मेयर ने तुरंत शहर के बुजुर्गों की एक बैठक बुलाई. वे इकट्ठे हुए और उन्होंने स्थिति का ज़ायज़ा लिया. मेयर की अध्यक्षता में एक प्रतिनिधि मंडल "बलवे" के दृश्य की जांच करने पहुंचा. दंगा करने वाले लोगों से निबटने के लिए पुलिस की स्पेशल टुकड़ी तैनात की गई और फौज को तुरंत वहां भेजा गया.

इस बीच, चोट से पीड़ित बेकर और उसकी पत्नी, आलिया के पास गए और उसके सामने घुटनों के बल गिर गए.
"छोटी बेटी, हमें क्षमा करो. हम क्रूर थे, हमने तुम्हारे साथ नाइंसाफी की. हमें माफ़ करो और अब हमारी मदद स्वीकार करो."
आलिया ने मुस्कुराते हुए कहा: "मुझे मदद की सच में जरूरत है."
फिर बेकर और उसकी पत्नी की मदद से उन्होंने गरीब लोगों की भीड़ को, लाइनों में आने को कहा. फिर उन्होंने आसमान से गिरे माल को, पास स्थित बेकर के गोदाम में छांटना शुरू किया.

मेयर को तब बेहद आश्चर्य हुआ जब उसे मालूम पड़ा कि उस उपद्रव के पीछे एक गरीब, छोटी, दुबली-पतली लड़की थी.

बस एक छोटी बच्ची उस शांत अंतहीन भीड़ को उपहार बाँट रही थी.

यह देखकर मेयर को बेहद शर्मिंदगी महसूस हुई.

सशस्त्र सेना ने वहां खुद को बेकार पाया.

अपनी लोकप्रियता को बरक़रार रखने के लिए मेयर सामान के उस पहाड़ के ऊपर चढ़ा और उसने भाषण देना शुरू किया. लेकिन किसी ने भी मेयर के भाषण की परवाह नहीं की, इसलिए थोड़ी देर बाद उसने अपनी बात बंद कर दी.

इस बीच कई अन्य स्वयं-सेवक भीड़ में शामिल हो गए.
धनी लोगों को लगा कि उन्हें खुद भी इस काम में हाथ बंटाना चाहिए.
उन्होंने भी अपना सामान दान किया.
इसलिए सामान का ढेर सिकुड़ने के बजाय लगातार बढ़ता ही गया.
साथ में गरीबों की संख्या भी बढ़ती ही गई. वे अब दूर-दूर से आ रहे थे.
अच्छी खबर तेजी से फैलती है. और यह खबर एकदम आग जैसी फ़ैली.
अखबारों और पत्रिकाओं ने इस कहानी को सुर्ख़ियों में छापा.
खबर के ऊपर चित्र छपे और लेख लिखे गए.

उस घटना का कभी कोई संतोषजनक स्पष्टीकरण नहीं मिला.
क्या वो चमत्कार था? क्यों नहीं. हो सकता है पृथ्वी की परिक्रमा करने वाली किसी उड़नतश्तरी से वो सब सामान गिरा हो? कुछ लोगों ने उसे देखने का दावा भी किया. कहीं मेयर ने वोट बटोरने के चक्कर में तो यह स्टंट नहीं रचा? हो सकता था. ज्यादातर बच्चों को लगा कि यह सांता क्लॉस ने किया होगा - असली सांता क्लॉस ने. पर आलिया की उन स्पष्टीकरणों में कोई दिलचस्पी नहीं थी. "जो बात असली मायने रखती है," उसने कहा, "वो यह है कि उससे कितने लोगों का भला हुआ."

बेकर का गोदाम अब सद्भावना का एक प्रतीक बन गया! गोदाम का आकार बढ़ा और फिर बढ़ता ही गया. क्योंकि उसके बाद वहां दुनिया भर से, हर देश और दिशा से, लोगों ने दान भेजा. उसके बाद दुनिया में जहाँ भी अकाल पड़ा, आग लगी, बाढ़ आई या युद्ध हुआ वहां आलिया के स्वयं-सेवकों ने जाकर लोगों के बीच राहत का काम किया.

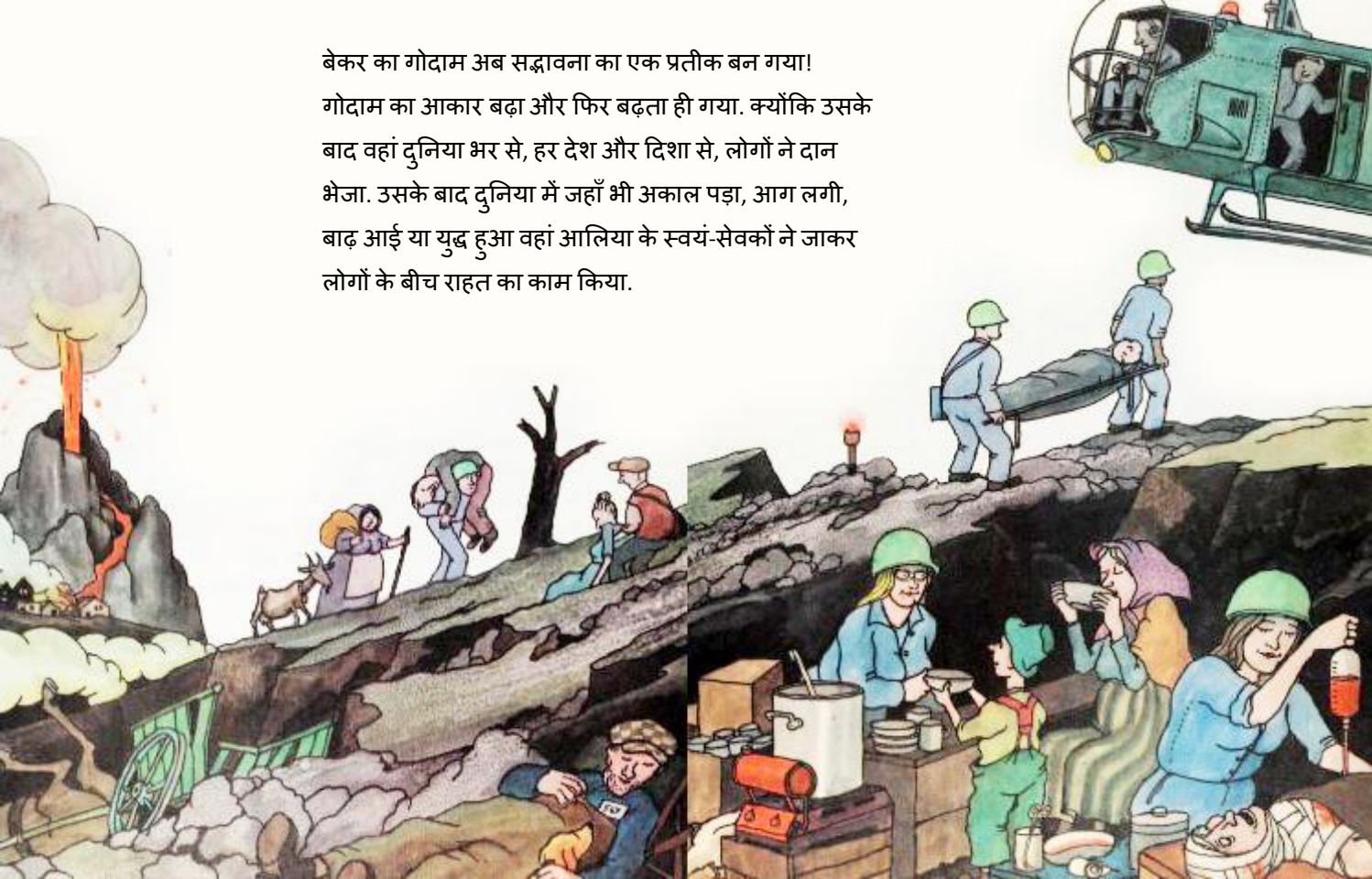

उस तरह का कोई तूफान दुबारा नहीं आया. वैसे अब आलिया अपनी NGO - **"वर्ल्ड फाउंडेशन ऑफ़ मैचलेस लाइट"** की मुखिया है.
उसने दुबारा किसी चीज़ के लिए फिर प्रार्थना नहीं की.
वो अब पूरी तरह से खुश है. अब जब कभी तूफान आते हैं तो ज्यादातर लोग अपने-अपने घरों में छिप जाते हैं, पर आलिया तब अपनी छत पर जाती है और बादलों का हाथ हिलाकर अभिनन्दन करती है.

समाप्त

ALLUMETTE